



What is Arya Samaj?

Arya Samaj founded by Maharishi Dayanand Saraswati is an institution based on the teachings of Vedas for the welfare of universe. It propagates the universal doctrines of humanity. It is neither a religion nor a sect.

ARYAN VOICE

YEAR 38

6/2016-17

MONTHLY

June 2016

- **Vedic Vivah Mela (Matrimonial get together)**
Saturday 18th June 2016
Book your place NOW....!
(For detailed information please see pages 14& 15)

- **Celebrate International Yoga Day**
At Arya Samaj Bhavan on Sunday 19th June 2016
At 12pm after Havan.

- **Annual General Meeting Sunday 31st July**

ARYA SAMAJ (Vedic Mission) WEST MIDLANDS
(Charity Registration No. 1156785)

188 INKERMAN STREET (OFF ERSKINE STREET), NECHELLS,
BIRMINGHAM, B7 4SA

Tel: 0121 359 7727

E-mail- enquiries@arya-samaj.org Website: www.arya-samaj.org

CONTENTS

10 Principles of Arya Samaj	3
Let us reside in a Virtuous Land	by Krishan Chopra 4
अध्यात्म के शिखर पर-२४	आचार्य डॉ. उमेश यादव 6
Matrimonial Advert	13
Vedic Vivah Mela (Matrimonial Get Together 2016)	14
List of Festivals for year 2016	16
News (पारिवारिक समाचार)	17
Important	19
Experienced Head/Duputy Head Teacher wanted	20

**For General and Matrimonial Enquiries
Please Ring
Miss Raji (Rajashree) Chauhan (Office Manager)
Monday to Friday between: - 2.30pm to 6.30pm,
Wednesday: - 11.00am to 1.00pm.
Bank Holidays – Closed - Tel. 0121 359 7727
E-mail- enquiries@arya-samaj.org**

10 Principles of Arya Samaj

- 1. God is the primary source of all true knowledge and all that is known by its means.(At the beginning of creation, nearly 2 Billion years ago, God gave the knowledge of 4 Vedas to four learned Rishis named Agni, Vayu, Aditya and Angira. Four Vedas called Rigved, Yajurved, Samved and Atharva Ved contain all true knowledge, spiritual and scientific, known to the world.)**
- 2. God is existent, intelligent and blissful. He is formless, omnipotent, just, merciful, unborn, infinite, invariable (unchangeable), having no beginning, matchless (unparalleled), the support of all, the master of all, omnipresent, omniscient, ever young (imperishable), immortal, fearless, eternal, holy and creator of universe. To him alone worship is due.**
- 3. Vedas are the scripture of all true knowledge. It is paramount duty of all Aryan to read them, teach and recite them to others.**
- 4. All human beings should always be ready to accept the truth and give up untruth.**
- 5. All our actions should be according to the principles of Dharma i.e. after differentiating right from wrong.**
- 6. The primary aim of Arya Samaj is to do good to the human beings of whole world i.e. to its physical, spiritual and social welfare.**
- 7. All human beings ought to be treated with love, justice and according to their merits as dictated by Dharma.**
- 8. We should all promote knowledge (Vidya) and dispel ignorance (Avidya).**
- 9. One should not be content with one's own welfare alone but should look for one's welfare in the welfare of all others.**
- 10. In matters which affect the well being of all people an individual should subordinate any personal rights that are in conflict with the wishes of the majority. In matters that affect him/her alone he/she is free to exercise his/her human rights.**

Let us reside in a Virtuous Land

यद्दारुणि बध्यसे यच्च राज्ज्यन् यद्भूम्याम् बध्यसे यच्च वाचा ।
अयं तस्मद् गार्हपत्यो नोऽग्निरुदिनायति सुकृतस्य लोकम् ॥

Yaddaruni badhyase yacca rajjvan yadbhumyam badhyase
yacca vaca II ayam tasmad gaarhpatyo no agnirudinnayati
sukritasya lokam II

Atharva Veda 6.121.2

Meaning in Text Order

Yat = whatever

Daaruni = tree

Badhyase = bound

Yat= whatever

Cha = and

Rajjvaam = with rope

Yat = whatever

Bhumyaam = underground

Badhyase = prisoned

Ayam = this

Tasmaat = from that

Gaarhpatyah = household

Agnih = fire

Nah = to us

Uta-nayaati = engage with

Sukritasya = virtuous

Lokam = land.

Meaning

Those member/members of a family who do wrongful acts and bring shame to their family do get punished in different ways according to the law of the land. This discourages others from such hideous crimes therefore protecting the citizens from criminals. Let the fire of yajna light the household life and raise us to a virtuous status.

Contemplation

Sometimes, the members of our own family stray from the virtuous path and commit crimes which are unacceptable to society. They are tried by the court and are punished. Sometimes people take the law in to their own hands and punish the culprits. As a result they may tie that person with rope to a tree and sometimes prison them in underground dark rooms and tying their hands and feet or put them in prison so that person cannot converse with other people. This brings infamy to the family. It is our desire that every member of the family be of good character.

It is an old tradition that when a person used to initiate household life, he used to light a fire for the marriage ceremony and that fire was kept alight. That fire was the symbol of their union. The fire was called **Gaarhpatya Agni**. In those days the fire we kept safe and from that fire daily yajna used to be performed. Although that tradition is not prevalent now a days we can still follow the spirit of it.

It is our desire that the spirit of **gaarhpataye** fire should not be extinguished from our minds. All the members of the family keep alive these elevated traditions. We the members of the family are the like fire which burns all the evils and makes our character sublime and pure. We try our best to keep the environment in our society clean and stainless. Let us maintain the high values of our families and make our environment full of virtues.

by **Krishan Chopra**

अध्यात्म के शिखर पर-२४

आचार्य डॉ. उमेश यादव

वेद-ज्ञान-विषयः

परमात्मा ने वेद को चार ऋषियों के माध्यम से संस्कृत भाषा में ही प्रकट किया। संस्कृत ही सृष्टि की आदि भाषा है। यही भाषा अन्य सभी विश्व की भाषाओं का कारण माना जाता है। अगर परमात्मा वेद को किसी अन्य भाषा में प्रकट करता तो वह निश्चित ही वहाँ का पक्षपाती होता जहाँ की वह भाषा होती। अतः पृथिवि आदि सृष्टि सब देशवासियों के लिये एक सी है; वैसे ही ईश्वरीय वेद ज्ञान व उसकी भाषा भी सबके लिये एक जैसी है। संस्कृत भाषा का आजकल प्रचार कम अवश्य है क्योंकि अब अलग-अलग देशों के लोगों की भाषा भी अलग होकर विकसित हुई हैं। संस्कृत सीखने में सबको समान परिश्रम करना पड़ेगा, इस कारण परमात्मा पक्षपाती नहीं है। उसने सबके समान कल्याणार्थ वेद ज्ञान प्रकाशित किया है।

निम्न कारणों से वेद ईश्वरीय ज्ञान सिद्ध है _

१. जैसा ईश्वर पवित्र, शुद्ध, सर्वविद्यायुक्त, न्यायकारी, अजन्मा, अनन्त, सर्वव्यापक, अजर, अमर, अभय व सृष्टिकर्त्ता है वैसे ही गुण-कर्म-स्वभाव वाला ईश्वर वेदों में वर्णित है। स्वयं के बारे में स्वयं से अच्छा कौन बता सकता है ?

२. प्रत्यक्ष आदि प्रमाण , आप्त पुरुषों व महात्माओं के कथन और विज्ञान

के विरुद्ध जिसमें कथन नहीं है; वही ईश्वरकृत है ।

३. ईश्वर का विनम्र ज्ञान यथावत् जिस पुस्तक में वर्णित है वही ईश्वरोक्त सिद्ध है ।

४. परमेश्वर और उसकी सृष्टि आदि क्रम यथावत् जिस पुस्तक में लिखा है वही वेद ज्ञान ईश्वरोक्त है ।

५. वेद प्रत्यक्षादि प्रमाणों के अनुकूल है । शुद्धात्मा आप्त पुरुषों के कथनानुसार जो पुस्तक है, वही ईश्वरोक्त मान्य है ।

इस तरह वेद के समान बाइबल, कुरान आदि अन्य पुस्तकें नहीं हैं क्योंकि ये पुस्तकें मनुष्यकृत हैं । इसका विस्तार कथन सत्यार्थप्रकाश के १३वें और १४वें समुल्लास में बाइबल, कुरान आदि के प्रकरण में प्रस्तुत है । विशेष ज्ञान हेतु वहाँ देखा जा सकता है ।

वेद कोई साधारण ज्ञान नहीं है । यह ईश्वरीय ज्ञान होने से सबसे भिन्न है । इसमें मानवीय गुण-कर्म-स्वभावों का वर्णन तो है पर मनुष्यादि का कोई इतिहास नहीं है । मनुष्यकृत ज्ञान में इतिहास की गुंजायस है पर ईश्वरीय ज्ञान में कदापि नहीं । हाँ वेद में सृष्टि-उत्पत्ति का ज्ञान है क्योंकि यह कार्य ईश्वर का है अतः इस विषय को अपने दिये गये वेद ज्ञान में स्वयं परमेश्वर ने विस्तार से वर्णित किया है । एक और बात विशेष जानें । वेद में जो मंत्र प्रयुक्त हैं; उनका संगठन छन्द, मात्रा आदि सब लौकिक संस्कृत ग्रन्थों से भिन्न है । यही कारण है कि आज तक अरबों वर्ष पुराना

होते हुये भी वेदों में कोई परिवर्तन नहीं आया, न हि कोई इसमें बाहर से जोड़/मिलावट ही । मनुष्यकृत प्रायः सभी ग्रन्थों में मिलावट/जोड़ आदि वृद्धि पायी जाती है । बाइबल, कुराण, महाभारत, रामायण आदि सब मिलावट के स्पष्ट उदाहरण हैं ।

वेदज्ञान-विकास व इसका प्रचार- प्रथम वेद का ज्ञान आर्यावर्त्त के तिब्बत स्थान में चार पवित्र आत्माओं अग्नि, वायु, आदित्य और अँगिरा ऋषि के पवित्र हृदय में परमेश्वर द्वारा प्रकाशित हुआ माना जाता है । वहीं से लोग जहाँ-जहाँ गये, वहाँ के लोग विद्वान् होते गये । पूर्व मिश्र, यूनान और यूरोप के लोग तो विद्याहीन ही थे । कहा जाता है कि अमेरिका में भी ईंग्लैंड से जब कुलुम्बस आदि विद्वान् गये तो उनसे वहाँ के लोगों ने विद्या सीखी, वरणा तब तक तो वहाँ के लोग विद्याविहीन ही थे । ईंग्लैंड में भी आर्यावर्त्तीय लोगों के आने पर ही विद्या का प्रचार हुआ । किंवदन्ती है कि अँगिरा ऋषि की संतानें ईंग्लैंड आदि के देशों में आकर वस गये थे । इस प्रकार पुराना इतिहास देखने पर पता चलता है कि वेद ज्ञान ही सबसे पुराना है; सब भाषाओं का मूल है जिसे विना पढ़े कोई विद्वान् नहीं बना । हाँ, आज तो अन्य भाषाओं के भी जो विद्वान् पाये जाते हैं उनका मूल ज्ञान भी तो वेदों में प्राप्त है जो हजारों, लाखों, करोड़ों वर्ष पहले लोगों को आर्यावर्त्तीय विद्वानों से मिला था । वेद को कोई बदल नहीं सकता; न हि बदल सका अत एव वेद ही ईश्वर द्वारा दिया गया ज्ञान है । इस कारण ही महर्षि पतँजलि ने ईश्वर को ही सबसे पुराना गुरु उद्घोषित किया-“ स पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवक्षेदात् ।-योग सूत्र-समाधि पाद्- २६ अर्थात् वह परमात्मा ही सबका अनादि गुरु है जो

कालसे भी अबाधित है; जिसने सृष्टि बनायी है, जो इसे चला रहा है और जो ही समय आने पर इसका संहार भी करता है । अतः सदा सर्वदा हमें उसी की उपासना करनी चाहिये ।

वेद और ऋषि-

वेद ईश्वरीय ज्ञान है तथा वेद की पहचान स्वयं में विशेष है; हमें यह जानना होगा । प्रश्न है कि वेद तो पूर्व के अग्नि आदि चार ऋषियों को ईश्वरीय कृपा से मिला पर अग्नि आदि उन ऋषियों को संस्कृत का ज्ञान तो था नहीं जिस भाषा में वेद है तो उन्हें संस्कृत का ज्ञान किसने दिया ? उत्तर- "जब दाँत न थे तब दूध दियो, जब दाँत दियो तो अन्न भी दें" इस सिद्धान्त पर यह सिद्ध है कि संस्कृत का ज्ञान भी उन्हें परमात्मा ने ही दिया । जब वेद दिया तो उन्हें समझने के लिये भाषा का ज्ञान देना भी परमेश्वर ने उचित समझा । महर्षि दयानन्द ने स.प्र. ७ समु. में स्पष्ट ही कहा कि वेद- भाषा का ज्ञान भी उन ऋषियों को परमात्मा ने ही दिया ताकि वे वेद को सम्यक् समझ सकें और आगे के ज्ञान-पिपासुओं को वेदामृत पिला कर तृप्त कर सकें । फिर अग्नि, वायु, आदित्य और अँगिरा ने ही क्रमशः ऋग्, यजुः, साम और अथर्ववेद को आगे के ऋषियों को पढ़ाया और बताया ।

वेद और मंत्र-ऋषि-

वेद तो चार ही हैं जो ऋग् आदि से जाने जाते हैं पर प्रथमतः इन वेदों के जिन-जिन मंत्रों का साक्षात्कार (अर्थ-प्रकाश) जिन-जिन ऋषियों ने किया उन्हीं ऋषियों का नाम उन मंत्रों के साथ जुड़ता

चला गया । यही "मंत्र-ऋषि" होता है । इसे "मंत्र-ऋषि- इतिहास" कह सकते हैं क्योंकि यह कालान्तर का योग है । इसी प्रकार मंत्रों की विषय-वस्तु को "मंत्र-देवता" के रूप में जाना गया । मूलतः वेद तो चार ही हैं, ब्राह्मण-ग्रन्थ आदि सब वेदों की व्याख्या-ग्रन्थ माने गये ।

इसी तरह स्मृतियाँ हैं । जिस ऋषि ने जो स्मृति लिखी, उसी ऋषि के नाम से वह स्मृति-ग्रन्थ प्रसिद्ध है । जैसे याज्ञवल्क्य स्मृति, मनुस्मृति आदि । कालान्तर में उपनिषदें भी इसी क्रम से बनीं । ईश, केन, प्रश्न, कठ, मण्डुक, माण्डुक्य, बृहदारण्यक, छान्दोग्य, श्वेताश्वतर, ऐतरीय, तैत्तरीय ये ११ उपनिषद् आर्ष प्रमाणित माने जाते हैं, बाकी सब उपनिषदें कपोलकल्पित मान्य हैं । ये सारे ग्रन्थ वैदिक अध्यात्म को खोलने में अत्यन्त सहायक हैं ।

यह तो स्पष्ट है कि मंत्र-भाग को ही वेद कहा जाता है और व्याख्या-भाग को ब्राह्मण आदि । महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में इसकी चर्चा विशद् रूप से की है । विस्तृत जानकारी के लिये वहाँ देखें ।

शाखायें-

वस्तुतः वेद की व्याख्या-भागों को ही शाखायें भी कही गयी हैं । मूलतः मंत्र-भाग तो वेद ही है जो चार हैं पर अन्यान्य व्याख्या-भाग शाखारूप में लगभग एक हजार चार सौ सताइस (१४२७) बताया गया है । ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका द्रष्टव्य है ।

ईश्वर की महती कृपा-

मनुष्यों के प्रति वेद का ज्ञान परमपिता परमेश्वर की महती

कृपा है । महर्षि दयानन्द के इन वाक्यों को जरा ध्यान से देखें-

” जैसे माता-पिता अपनी संतानों पर कृपा-दृष्टि कर उन्नति चाहते हैं वैसे ही परमात्मा ने सब मनुष्यों पर कृपा करके वेदों को प्रकाशित किया है जिससे मनुष्य अविद्यान्धकार भ्रमजाल से छूटकर विद्या विज्ञानरूप सूर्य को प्राप्त होकर अत्यानन्द में रहें और विद्या तथा सुखों की वृद्धि करते जायें ।”

वेदों की नित्यता ?-

यह एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न है । महर्षि दयानन्द ने स्पष्ट लिखा कि वेद नित्य है । यह सर्वथा सत्य है । जैसे ईश्वर नित्य है वैसे ही उसका दिया गया ज्ञान भी नित्य ही है । नित्य अस्तित्व के गुण-धर्म भी नित्य ही होते हैं । अनित्य पदार्थ के गुण-धर्म अनित्य । परमात्मा जब नित्य है तो ज्ञान उसका गुण-धर्म होने से वेद-ज्ञान भी नित्य ही हुआ । सृष्टि अपने -आप में अनित्य है तो सृष्टि के गुण-धर्म भी अनित्य ही होंगे । नित्य का अर्थ है-जो सदा एक रस रहे और अनित्य का अर्थ है-जो सदा परिवर्तित होता रहे । परमात्मा सदा एक रस रहता है; उसमें कोई परिवर्तन नहीं होता पर सृष्टि सदैव प्रलय व सृजन का शिकार होती रहती है । जैसे परमात्मा में कोई परिवर्तन नहीं होता है वैसे ही चारों वेदों में अब तक कोई परिवर्तन नहीं हुआ ।

वेद-पुस्तक की नित्यता ?-

प्रश्न है कि वेद-पुस्तक नित्य है वा अनित्य । यहाँ यह विचारणीय है कि अगर तो स्याही, कागज आदि पत्रों को वेद समझते हो

तो यह अनित्य है क्योंकि ये स्याही, कागज आदि सृष्टि के पदार्थ हैं पर वेद में लिये शब्द, अर्थ और सम्बन्ध को जानों तो वह नित्य है क्योंकि

इनमें कोई परिवर्तन नहीं होता है -महर्षि दयानन्द-स.प्र. ७ समु. पढ़ें । अतः यह स्पष्ट है कि वेद में प्रयुक्त शब्द, छन्द, स्वर आदि सब नित्य है । इनका संगठनात्मक विधा सब परमात्मा द्वारा ही प्रदत्त है । ईश्वर के विना इनका समुचित संगठन सम्भव नहीं । ज्ञेय के विना ज्ञान का बोध नहीं होता । परमात्मा ही सर्वज्ञ और ज्ञेय है अतः उससे निकला वेद-ज्ञान भी स्वतः प्रमाण और मानव-जीवन के सफलतार्थ पूर्ण व्यावहारिक ज्ञान है । व्याकरण, निरुक्त, शिक्षा, कल्प, ज्योतिष, छन्द आदि का प्रकाश कालान्तर के ऋषियों व आचार्यों ने किया ताकि उनकी सहायता से वेदों की समुचित व्याख्या की जा सके । सब आर्य विद्वानों का यही मानना है ।



VEDIC VIVAH (MATRIMONIAL) SERVICE

The vedic vivah (matrimonial) service has been running for over 30 years at Arya Samaj (West Midland) with professional members from all over the UK.

Join today.....

Application form and information can be found on the website

www.arya-samaj.org

Or

Call us on

0121 359 7727

Monday to Friday between: - 2pm to 6pm,
Except Wednesday: - 10.30am to 1.00pm
Bank Holidays - Closed

VEDIC VIVAH MELA (Matrimonial Get Together) **2015**

Date: Saturday 18th June 2016

Venue: Arya Samaj West Midlands, Erskine Street, Nechells,
Birmingham B7 4SA (Road Map available on our Website)
www.arya-samaj.org

Time: 11.30am – 5pm

Cost: £25.00 per applicant. **NO GUESTS**

Buffet: Vegetarian meal included with soft drinks (no alcohol will be allowed or served)

How will it work?

We will have registration, welcome drink, light snacks and mingling.

Speed dating - Members will meet each other for a period of 3 to 4 minutes, during which you will be able to chat and find out about each other. (If you like the person, make a note of their ref number on the packs given on the day and we will send you there information by email). When the time is up, a bell will sound; you will change partner and repeat the process.

Once the speed dating is over, late lunch will be served and everyone is free to mingle some more before the end of the event.

We will explain the above and other details of the event on the day.

What you need to do now?

This Get-together is strictly for Arya samaj west Midlands registered matrimonial service candidates only. So if you are not registered as yet and wish to benefit from this event where you can meet personally a number of prospective partners hurry up and join. **Forms are available on our website www.arya-samaj.org. Or tel. 0121 359 7727**

Please send your application forms well before the day of the event because it is first come first served basis. **(Forms can be found on the website or by calling the office)**. For the smooth running of the event, all the information must be processed and the paper work completed for the participants on their arrival. Applications received after 5th June 2016, would not be entertained. But please do not wait till the last date. It might be too late.

Sorry at this event we are not allowing guest. If you bring someone with you on the day they will be refused entry.

Please send application forms and cheques made payable to ‘Arya Samaj West Midlands. **(Applicants £25)** with a self addressed stamped envelope to Arya Samaj West Midlands, Erskine Street, Nechells, Birmingham B7 4SA .You will be sent confirmation by post and email. You will have to bring this with you on the day or no entry will be allowed. Regrettably no entry will be available on the day, so please register in advance.. **If you come on the day without an entry confirmation it would be a wasted journey.**

So what are you waiting for? Look no further and think no further! Send in your application forms and cheque today!

We look forward to welcoming you to the event where you have the prospect of meeting that special SOMEONE!!

List of Festivals for year 2016

Festival	Actual Date of Festival	Date for celebration in Arya Samaj
Republic Day of India	Tuesday 26th January	Sunday 31st January.
Rishi Bodh Utsav	Monday 7th March	Sunday 6th March
Holi	Thursday 24th March	Sunday 27th March.
Arya Samaj Foundation Day	Sunday 10th April	Sunday 10th April
Ram Navmi	Friday 15th April	Sunday 17th April.
Annual General Meeting	N/A	Sunday 31st July
Ved Katha (8 days)	N/A	From Thursday 18th August till Thursday 25th August
Raksha Bandhan	Thursday 18th August	Sunday 21st August
Independence Day of India	Monday 15th August	Sunday 21st August.
Shri Krishna Janmasthanmi	Thursday 25th August	Thursday 25th August
Special Satsang for University Students	N/A	Sunday 4th September
Gayatri Maha Yajna	N/A	Sunday 18th September
Dasahahara	Tuesday 11th October	Sunday 16th October
Diwali	Sunday 30th October	Saturday 29th October

News

Donations to Arya Samaj West Midlands

- Mrs. Sapna (Birmingham) in loving memory of her father. £101
- Mr Seerutun £10
- Mrs. N. Prinja £10

Donations to Arya Samaj West Midland through the Priest-Services.

- Mr. Vikram Chopra (Miltonkynes) for Grih-Pravesh £51
- Dr. Pramode Sabharwal for Shanti havan in sweet memory of his late mother Mrs. Asha Sabharwal. £50
- Mr. Rajan Thaper for Mundan Sanskar of his son & daughter £101
- Mrs. Bhawna Bidani & Mr. Kamal for Grih-Pravesh-havan £51
- Mr. Alok Yadav & Dr. Megha Yadav for Wedding reception havan £101

Many congratulations to all above mentioned families who have had auspicious havan at their residences on different occasions or Sunday

Vedic Satsangs in Arya Samaj Bhavan.

Thank you for all your Donations

**Please contact Acharya Dr Umeh Yadav on
0121 359 7727
for more information on**

- **Member or non member wishing to be a Yajman in the Sunday congregation to celebrate an occasion or to remember a departed dear one.**
- **Have Havan, sankars, naming, munden, weddings and Ved Path etc performed at home.**
- **Our premises are licensed for the civil marriage ceremony.**
- **Please join in the Social group at Arya Samaj West Midlands every Wednesday from 11am. Emphasis is on keeping healthy and fit with yoga and Pranayam. Hot vegetarian Lunch is provided at 1pm.**
- **Ved Prachar by our learned Priest Dr Umesh Yadav on Radio XL 7 to 8 am, first Sunday of the month. Next 5th June 2016 & 3rd July 2016**

Every effort has been taken that information given is correct and complete. But if any mistake is spotted please inform the office.

0121 359 7727

E-mail- enquiries@arya-samaj.org

Website: www.arya-samaj.org

IMPORTANT

Notices to Arya Samaj West Midlands Members

- **Reminder to our Life members from Dr. Narendra Kumar (Chairman). In July 2014 we requested our life members to donate £15 or £10 per year to help us with the cost of publishing, printing and posting our monthly bulletin "Aryan Voice". I am happy to say that vast majority of members have donated money to help us with this cost. It is a very polite request to our life member please continue with this donation. Those of you who have not donated any money till now please do so.**
- **Dear Ordinary members of ASWM. This is a polite request to pay your annual fee of £20 membership when you receive a reminder letter from Arya Samaj Office. This money helps us to send you Aryan Voice each month. The letter will come out to members on the month they joined. From January 2016 we will have to sadly cancel the membership of those who have not paid the fee.**
- **Dear members, we are updating our email database for the membership of Arya Samaj West Midlands. We do not have email addresses of a large number of our members. In this time and age it is important to have this information. So if you have an email address please inform our office by emailing your address to enquiries@arya-samaj.org. Your cooperation will be highly appreciated.**

Experienced Head/Duputy Head Teacher wanted

We are urgently looking for a Head or a Deputy Head Teacher from a primary School rated "Good" or "Outstanding" to join our dedicated team of members working for proposed DAV Primary Free School.

A recently retired Head/Deputy Head teacher will also be acceptable.

We need this person to develop the educational plan for our School project.

Those of you who are interested please get in touch with us by telephoning Arya Samaj West Midlands no. 0121 3597727 or send an email at enquiries@arya-samaj.org

**Dr. Narendra Kumar
Chairman
The Board of Trustees
Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands**